आइने में मेने ख़ुद को देखा

जब आइने में कोई देखता है, देखने वाले का देखना सिर्फ़ उनका है, देखने वाला का देख ना उस बात पर निर्भर करता है की वो किस बात से जुड़ा है, अगर कोई चेहरे से जुड़ा है तो उन्हें चेहरा दिखेगा, अगर उन्हें अपने चेहरे पे अभिमान है तो उन्हें सिर्फ़ चेहरा दिखेगा, वो कहेगा कि चेहरा है वो मेरा है, जो चेहरा है वो में हु, अगर किसिको अपने बालों पे नाज़ है तो उन्हें अपने बाल दिखेगा, किसिको अपने होंठ पे नाज़ है तो उन्हें अपने होंठ दिखाय देंगे, किसिका आइने में देखना उतना ही है जितना वो कोई बात से जुड़ा है, किसिका आइने में देखना उस बात पर निर्भर करता है की वो किस बात से जुड़ा है, जब आपने नए कपड़े पहने है तब आपको कपड़े पहले देखाय देंगे, आपको अपने नए कपड़े से नाज़ है, आपको कपड़े से लगाव है, आप अपने कपड़े से जुड़े हुवे है, यह आपका दिखना शरीर के अँगो के साथ जुड़ा हुवा है, पर जिस दिन आपको पूरे शरीर पर गर्व होगा तब आपको अपना पूरा शरीर दिखेगा, किसिको शरीर का कोई भाग दिखे या पूरा शरीर दिखे पर बात तो यही है की उन्हें शरीर ही दिख रहा है, भले हमने शरीर के हिस्से के नेम अलग अलग दिए हो, जब किसिको पूरा शरीर दिखता है तब शरीर के हिस्से तो वैसे के वैसे ही होते है, सिर्फ़ नेम ग़ायब हो जाता है, जैसे किसी को चेहरे पे गर्व है, तो उन्हें अपना चेहरा पहले दिखाय देता है पर वो चेहरा शरीर का एक हिस्सा ही है, तो आइने में शरीर का कोई हिस्सा पहले दिखाय दे या पूरा शरीर दिखाय दे बात एक ही की उन्हें अपना शरीर ही दिख रहा है, जैसे किसी को शरीर के कोई हिस्से या पूरा शरीर पर लगाव हो तो उन्हें शरीर दिखाय देता है वैसे अगर कोई शरीर से तटस्थ हो, मुक्त हो, कोई लगाव भी ना हो, और घृणा भी ना हो, जब ऐसी स्थिति वाला कोई आइने में देखता है तब वह कहता है आइने में कोई दिख रहा है, आइने में किसिका दिखना हो रहा है, अगर वो कहे की शरीर दिख रहा है तब भी वो शरीर से जुड़ा है, उन्हें शरीर दिख रहा है, तब वो कह सकता है की “आइने में मेने ख़ुद को देखा”।

Aasthit